BA (Hons.) PART –II, Paper- III

डॉ0 गौतम कुमार

अतिथि शिक्षक

राजनीति विज्ञान विभाग

आचार्य नरेन्द्र देव महाविद्यालय, शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

धर्म और राजनीति

संविधान द्वारा भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया गया है फिर भी भारतीय राजनीति में धर्म का एक विशेष महत्व है। हमलोग धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना तो कर लिये, किन्तु धर्मनिरपेक्ष समाज की स्थापना नहीं कर सके। आज भी हमारे समाज में धार्मिक विभिन्नता होने के कारण समाज में विभिन्न प्रकार के तनाव एवं कल्ह पैदा हो रहे हैं। राजनीतिज्ञ इन तनावों को बढ़ावा देकर, इसी के माध्यम से अपना स्वार्थ एवं हित की पूर्ति कर रहे हैं। बी.जी.गोखले ने कहा था कि, "राजनीति से धर्म के अलग हो जाने से हिन्दू और मुसलमानों के पुराने विरोध फिर कभी उत्पन्न नहीं होगें। अधिकांश राजनीतिक दल धर्म के आधार पर अपनी रोटी सेकने में लगे हुए हैं। इसी को अपना आधार बनाकर राजनीति कर रहे हैं। धर्म का राजनीतिक शक्ति के रूप में काफी दुरूप्रयोग हो रहा है।

धर्म और राजनीति में परस्पर क्रिया – भारतीय राजनीति में धर्म को निर्धारक तत्व माना जाता है। धर्म का प्रयोग राजनीति में तनाव उत्पन्न करने के लिए किया जा रहा है, वही कहीं–कहीं प्रभाव और शक्ति अर्जन करने का माध्यम भी बना लिया जाता है। चुनाव के समय जनता का समर्थन एवं मत प्राप्त करने में भी धर्म का सहारा लिया जाता है। धर्म, भारतीय राजनीति के स्वरूप को निम्नलिखित ढ़ग में प्रभावित कर रहे हैं :–

1. **धर्म और राजनीतिक दल**– आजादी के बाद धर्म और सम्प्रदाय के आधार पर भारत में राजनीतिक दलों का गठन हुआ है। हिन्दू महासभा, शिरोमणी अकाली दल, रामराज्य परिषद् आदि राजनीतिक दलों के निर्माण में धार्मिक एवं सम्प्रदायिक तत्वों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ये सभी साम्प्रदायिक दल राजनीति में धर्म को प्रधानता देते हैं और धर्म के आधार पर चुनावों में प्रत्याशियों का चयन करते हैं तथा सम्प्रदाय के नाम पर जनता

से वोट मॉगते हैं। भारतीय जनता पार्टी ने भी राम मन्दिर के नाम पर वोट बैंक की राजनीति की थी। प्रो0 मॉरिस जोन्स ने लिखा है कि, "कोई राजनीतिक दल किसी विशेष धार्मिक समुदाय के राजनीतिक दलों की रक्षा के लिए बनी हो, तो कुछ दल ऐसी हैं जो स्पष्ट रूप से अपने को साम्प्रदायिक कहती है। जैसे– मुस्लिम लींग जो भारत में सिर्फ दक्षिण भारत में रह गई है और मालावार मोपला समुदाय के बल पर केवल केरल में ही शक्शिाली है, सिखों की अकाली पार्टी जो सिर्फ पंजाब में ही है, हिन्दू महासभा जिसका अब कोई प्रभाव क्षेत्र नहीं रहा।"

2. **राजनीति में धार्मिक दबाब गुट** – भारतीय राजनीति में धार्मिक संगठन सशक्त दबाब समूह के रूप में अपनी भूमिका निभाने में लगे हैं। ये धार्मिक दबाब गुट शासन पर अपना दबाब बनाकर उनकी नीतियों को प्रभावित करने का काम करते हैं तो कभी–कभी शासन पर दबाब बनाकर अपने पक्ष में नीतियों का निर्माण भी कराती है। वर्ष 1986 में मुस्लिम वर्ग के साम्प्रदायिक दबाब ने "मुस्लिम महिला संरक्षण कानून" पारित करवाया, जिससे शाहबानो विवाद में सर्वोच्च न्यायालय का प्रगतिशील निर्णय शून्य हो गया।
3. **धर्म और राष्ट्रीय एकता** – धर्म और साम्प्रदायिकता राष्ट्रीय एकता के लिए घातक माने जाते हैं। धार्मिक मतभेदों के परिणामस्वरूप ही हमारे देश का विभाजन हुआ और उसी के कारण आज भी विघटनकारी तत्व सक्रिय है।
4. **मंत्रिमण्डल के निर्माण में धार्मिक आधार पर प्रतिनिधित्व** – केन्द्र और राज्यों के मंत्रिमण्डल के निर्माण के समय प्रमुख सम्प्रदायों और धार्मिक विश्वास करने वाले व्यक्तियों को इसमें शामिल किया जाता है। केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में अल्पसंख्यकों जैसे– मुसलमानों, सिखों, ईसाईयों को सदैव प्रतिनिधित्व दिया जाता है।
5. **धर्म और निर्वाचन** – भारत के अधिकांश राजनीतिक दल एवं उनके नेताओं द्वारा धर्म एवं सम्प्रदाय के बारे में विभिन्न प्रकार की दलील देकर चुनाव के समय जनता से वोट मॉगते हैं। वोट बटोरने के लिए पादरियों, साधुओं एंव मठाधीशों के साथ सांठ–गांठ भी करते हैं। चुनाव के समय मत मॉगने वाले एवं मतदान करने वालों में इस तरह के धार्मिक तत्व छाये रहते हैं। विभिन्न लोकसभा चुनावों में राजनीतिक दल के द्वारा धर्म

के आधार पर अपना वोट इकट्ठा किए। जैसे – 1989 के लोकसभा चुनावों में धार्मिक मुद्दा छाया रहा एवं 1991 के चुनाव में सम्प्रदायिक प्रश्न छाये रहे।

6. **राज्यों की राजनीति में धर्म की प्रभावक भूमिका** – राज्यों की राजनीति में भी धर्म अपना प्रभाव डालती है। केरल की राजनीति का अन्तरंग धार्मिक और साम्प्रदायिक गुटों के गठजोड से बनता है। राज्यों की राजनीति में दबाब समूह दो रूपों में देखने को मिलता है। पहला साम्प्रदायिक और दूसरा व्यावसायिक। साम्प्रदायिक दबाब समूहों में नयर सर्विस सोसाइटी, श्री नारायण धर्म परिपालन युगम् और अनेक ईसाई संगठन प्रमुख हैं। जमीन्दार, धनिक वर्ग, व्यापारी आदि वर्ग इन्हीं संगठनों से जुडे हैं। अतः यह साम्प्रदायिक व धार्मिक गुट शासन के निर्णय को प्रभावित करते हैं। पंजाब की राजनीति में अकाली दलों की आन्तरिक राजनीति तथा सशक्त और समृद्व शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबन्धक समिति के निर्वाचन के इर्द–गिर्द घूमती है। समय–समय पर विभिन्न राज्यों के क्षत्रों में मन्दिर और मस्जिद का मुद्वा भी राजनीतिक भूमिका का केन्द्र बन जाता है।